खुशबू हो हर फूल में, हो हर बच्चा स्कूल में

प्रियंका कुमारी

अक्सर इस नारे का उपयोग हम शिक्षक 'नामांकन अभियान' के दौरान करते हैं। लेकिन इस नारे का मर्म सिर्फ नामांकन अभियान से ही जुड़ा हुआ नहीं है बल्कि बाद में भी बच्चे नियमित रूप से विद्यालयों में उपस्थित होकर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में सहभागी बने रहें, यह ज़रूरी है। नामांकन के बाद स्कूल आने के प्रति बच्चों में आकर्षण बनाए रखना, एक कठिन और चुनौतीपूर्ण काम है। खासकर, सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ बच्चों में विद्यालय आने की निरन्तरता को कायम रखने के लिए घर से ज़्यादा दबाव नहीं होता है। लेकिन अगर एक शिक्षक चाहे, तो वह तमाम चुनौतियों के बीच और सीमित संसाधनों के साथ राह बना ही लेता है।

जुड़ाव बनाने की कोशिश

इसी तारतम्य में, मैं अपना एक अनुभव आप लोगों के साथ साझा करना चाहती हूँ। कुछ महीनों पहले हमारे स्कूल में हीरमल नाम की एक बच्ची ने नामांकन करवाया था जिसका वास्तविक नाम हेमंती है। उसे खुद को हीरमल कहलाना ही पसन्द है इसलिए मैं उसे यही बुलाती हूँ। हीरमल कक्षा में काफी चुपचाप रहती थी और उसके मुँह से कुछ बुलवाना निहायत ही मुश्किल काम था। जब मैं पहली बार उससे मिली तो हमने बातचीत की शुरुआत आम के फल से की थी क्योंकि उस समय आम का मौसम था जो आम



तौर पर लगभग हर घर में उपलब्ध होता है और बच्चों को बहुत पसन्द भी आता है। मैंने उसकी स्लेट पर आम का चित्र बनाया और उसका हाथ पकड़कर, उससे भी अभ्यास करवाया। पहले तो हीरमल ने अपनी काजल लगी आँखों से बड़ी ही मासूमियत से मेरी ओर देखा और फिर मुझे मुस्कराता देख, वह भी काफी खुश हो गई। उसकी खुशी को मैंने अपने मोबाइल के कैमरे में कैद कर लिया। हमने साथ में तरह-तरह के हाव-भाव के साथ सेल्फी भी खींचीं। मैंने महसूस किया कि वह मेरे साथ फोटो खिंचवाने में काफी सहज महसूस कर रही है। मैं इस सबकी विडियो रिकॉर्डिंग कर रही थी और उसे कैमरे के सामने बोलना अच्छा लग रहा था। इसी तरह बाकी बच्चों के साथ भी मैंने ऐसा ही किया।

चूँकि मैं उस कक्षा की शिक्षिका नहीं थी इसलिए मेरा और हीरमल का मिलना नियमित नहीं था। मेरे मन में उसकी वो मासूम छवि घर कर गई थी इसलिए मैं बीच-बीच में उसकी खोज-खबर ले लिया करती थी। कुछ अन्य शैक्षणिक कार्यक्रमों में प्रतिनियुक्त हो जाने की वजह से मैं काफी दिन स्कूल नहीं जा सकी। फिर जब स्कूल गई और हीरमल के बारे में आसपास के बच्चों से पता किया तो मालूम चला कि इन दिनों वह स्कूल नहीं आ रही है। स्कूल न आने का कारण पूछा तो बच्चे कोई जवाब नहीं दे पाए। इससे थोड़ी निराशा तो हुई लेकिन फिर मैं अपने काम में मशगूल हो गई।

हीरमल की खोज-खबर

अगले दिन मैं स्कूल थोड़ी जल्दी आ गई थी, तब तक स्कूल में कोई नहीं आया था। मैंने सोचा, चलो हीरमल का पता लगा लूँ कि वह स्कूल क्यों नहीं आ रही। स्कूल के पास, सड़क के किनारे कुछ लोग बैठे थे, उनमें से एक से पूछा, “हीरमल नाम की एक बच्ची है... क्या आप मुझे उसके घर का पता बता सकते हैं?” संयोग से हीरमल का घर स्कूल से थोड़ी ही दूरी पर था, इसलिए उनमें से एक ने मुझे उसका घर दिखा दिया। फिर क्या था, मैं खुशी-खुशी उसके घर की तरफ यह सोचते हुए चल दी कि वह आज मुझसे मिलकर खुशी-से झूम उठेगी और कहेगी कि आज दीदीजी (बच्चे मुझे ‘दीदीजी’ नाम से पुकारते हैं) मेरे घर पर मुझसे मिलने आई हैं। यही सोचते-सोचते उसके दरवाज़े तक पहुँची और देखा कि उसका घर बाँस की टाट और मिट्टी से बना हुआ था जिसके आँगन में बकरी और भैंस भी बँधी थीं। उसकी दादी पशुओं को चारा दे रहीं थीं। खैर, मैंने उसकी दादी से पूछा, “हीरमल कहाँ है और वह स्कूल क्यों नहीं आ रही है?” उसकी दादी ने अपना काम करते हुए अनमना-सा जवाब दिया, “पता

नहीं, क्यों नहीं जा रही... रोज़ तो उसे कहती ही हूँ, फिर भी नहीं जाती तो मैं क्या करूँ।" मैंने उन्हें बताया, "मैं आज उसे अपने साथ स्कूल ले जाने के लिए आई हूँ। आप कृपा कर उसे बुला दीजिए।" उन्होंने अपने छोटे बेटे को उसे बुलाने के लिए भेज दिया।

दो-चार मिनट के इन्तज़ार के बाद हीरमल घर के भीतर से आती दिखाई दी। उसे देखते ही मेरी आँखों में चमक और होठों पर मुस्कान तैरने लगी। पर ये क्या... जैसे ही वह मेरे नज़दीक आई, मैं स्तब्ध रह गई क्योंकि मुझे देखकर उसके चेहरे पर कोई भाव ही नहीं उभरे। वह काफी सहमी-सहमी-सी थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह मुझे पहली बार देख रही हो। मुझे बड़ा ही अजीब लगा क्योंकि मैंने सोचा था कि वह मुझे देखते ही एक चौड़ी-सी मुस्कान के साथ प्रतिक्रिया देगी कि 'दीदी आप मेरे घर आई हो'। पर यहाँ तो सब कुछ उलटा ही था। वह मुझे भूल चुकी थी और मुझे देखकर अनजाने भय से सहम रही थी। मैं उसकी मनोस्थिति को भाँप गई थी इसलिए प्यार-से उसका हाथ थामते हुए मुस्कराकर कहा, "क्या तुम मुझे भूल गई हो? मैं तुम्हारी दीदीजी हूँ और मैं तुम्हें स्कूल ले जाने के लिए आई हूँ।" मेरी बातों को अनसुना करते हुए वह धीरे-से अपना हाथ मेरे हाथ से छुड़ाने की कोशिश करने लगी जिससे मुझे काफी तकलीफ महसूस हुई। एक बच्चे का अपने शिक्षक को भूल जाना, शिक्षक के लिए अत्यन्त कष्टकर होता है। यह बतौर शिक्षक मेरे अस्तित्व पर एक प्रश्नचिन्ह था। मेरा दिमाग अचानक भाव-शून्य हो गया कि अब मैं क्या करूँ!

फोटो ने दिलाई याद

उसके परिवार वाले भी नाराज़गी दिखा रहे थे, "तू दीदी को नहीं पहचान रही" और वह चुपचाप मेरी ओर ताके जा रही थी। तभी अचानक मुझे कुछ याद आया और मैं पास में रखी कुर्सी पर बैठकर फटाफट अपने बैग से मोबाइल निकालने लगी, ताकि हीरमल को हमारी पहली मुलाकात के बारे में याद दिला सकूँ। मैंने मोबाइल में उसकी और अपनी साथ वाली तस्वीरें और वीडियो खोजे कीं और उसे एक-एक कर बिना कुछ कहे दिखाने लगी। जैसे-जैसे वह तस्वीरें देखती जा रही थी, वैसे-वैसे उसके चेहरे के भाव बदलते जा रहे थे। इसी क्रम में मैंने पूछा, "अब बताओ, कुछ याद आया?" इस बार उसने मुस्कराते हुए मेरी ओर देखा और फिर से फोटो देखने लगी।

उसकी मुस्कान से मुझे एहसास हो गया था कि अब उसे सब कुछ याद आ गया है। इसलिए मैंने उससे सीधे पूछा, "क्यों, अब स्कूल चलोगी न?" उसने सहमति में सिर हिलाते हुए "हाँ" कहा और दौड़कर अपनी

प्लास्टिक की बोरी में कॉपी-कलम ले आई। स्कूल जाने के लिए उसने मुस्कराते हुए मेरी उँगली पकड़ ली। एक शिक्षक के तौर पर मेरे लिए यह काफी भावुक क्षण था क्योंकि मोबाइल से ली गई कुछ तस्वीरों की बदौलत आज मैं पुनः इस बच्ची का प्रेम और विश्वास प्राप्त कर पाने में सफल हुई थी। जिस समय इन्हें मैंने खींचा था, उस समय बिलकुल भी अन्दाज़ा नहीं था कि ये तस्वीरें कभी मेरे अस्तित्व को बचाने के काम आएँगी।



फिर स्कूल चले हम

हमने इस यादगार पल की एक तस्वीर पुनः अपने मोबाइल में कैद कर ली। साथ ही, हीरमल को और अधिक सहज करने के लिए मैंने उसके आँगन में बँधी भैंस और बकरी के बारे में पूछा कि उसे दोनों में से कौन ज़्यादा पसन्द है और अगर उसे फोटो खिंचवानी हो तो वह किसके साथ खिंचवाएगी। इस पर उसने अपनी भैंसों का नाम लिया। फिर हमने मिलकर भैसों के साथ भी सेल्फी ली जिसे देखकर वह काफी खुश हुई। इसके बाद वह मेरी उँगली थामे स्कूल के लिए चल दी। मैं भी सारे रास्ते एक ‘विश्व-विजेता’ की तरह उसके हाथ को थामे गर्व के साथ चल रही थी क्योंकि उसका मेरी उँगली पकड़कर स्कूल आना, एक शिक्षक के तौर पर मेरे लिए बहुत मायने रखता था।

हीरमल ने जब दोबारा शाला में कदम रखे तो अब मैं भी नियमित रूप से उससे बातें करती रही। साथ ही, मौका मिले तो, पढ़ने-लिखने में उसकी मदद भी कर देती। कक्षा शिक्षिका भी हीरमल पर ध्यान दे रही थीं। इन सबका मिला-जुला असर यह रहा कि हीरमल कक्षा में

नियमित रूप से आने लगी और पढ़ाई में रुचि भी लेने लगी।

मदद के हाथों की कमी नहीं

मैंने अपने इस अनुभव को संक्षिप्त में अपने 'लिंक्डइन' के सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किया, क्योंकि मैं आज का दिन भूलना नहीं चाहती थी और साथ ही, लोगों तक यह सन्देश भी पहुँचाना चाहती थी कि एक साधारण-सी तस्वीर भी समय आने पर एक असाधारण मदद कर सकती है। इस पोस्ट पर काफी सकारात्मक फीडबैक मिले। इसलिए मैंने लिंक्डइन पर यह अनुरोध किया कि 'हीरमल प्लास्टिक की बोरी में किताब लेकर पढ़ने आती है। क्या आप लोगों में से कोई भी उसे एक छोटा-सा स्कूल बैग गिफ्ट करना चाहेगा ताकि इस बच्ची के अन्दर स्कूल आने की प्रेरणा और सुदृढ़ हो सके।' इस अनुरोध पर धनबाद, झारखण्ड के एक इलेक्ट्रिक इंजीनियर श्री त्रिभुवन राय ने तुरन्त जवाब दिया कि वे इस बच्ची के लिए स्कूल बैग भेजेंगे। इस जवाब से मुझे समझ आया कि कोशिश करें तो आज भी मदद करने वाले हाथों की कोई कमी नहीं है।

एक सप्ताह बाद बैग मेरे घर पहुँच गया। हीरमल को उसकी दादी की उपस्थिति में मैंने स्कूल बैग के साथ-साथ अपनी ओर से एक कॉपी और पेंसिल भी दी और उससे वादा लिया कि वह रोज़ स्कूल आएगी।

ज़रूरी है जुड़ाव बनाए रखना

स्कूल से लौटते वक्त मैं पुनः हीरमल के घर जाकर उसकी माँ



और दादी से मिली ताकि मैं परिवार वालों से भी यह वादा ले सकूँ कि वे बच्ची को नियमित रूप से विद्यालय भेजने में कोई कोताही नहीं बरतेंगे। सबने वादा किया और अब वह प्रतिदिन स्कूल आ रही है। उसकी दादी ने एक दिन बताया कि वह स्कूल के समय से पहले ही दो-तीन बार जाकर देख आती है कि दीदी आई हैं या नहीं। यह सुनकर हृदय में एक अपार सन्तुष्टि का अनुभव हुआ।

इस पूरे अनुभव को आप सभी के साथ साझा करने का मकसद यह जताना है कि हमारे पास जो भी सीमित संसाधन हैं, हम उनका प्रभावी प्रयोग अपने विद्यालय और छात्रों के लिए कर सकते हैं। यह ज़रूरी नहीं है कि सिर्फ तस्वीरें खींचकर ही हम बच्चों को आकर्षित करें, हमारा तरीका या हमारे संसाधन विविध हो सकते हैं जो बच्चों को नियमित विद्यालय आने के प्रति आकर्षित कर सकते हैं। ज़रूरत बस एक चीज़ की है, और वह है हमारी ईमानदार एवं मज़बूत इच्छाशक्ति जो हमें बच्चों के साथ जोड़ने के लिए पर्याप्त है। साथ ही, यह भी समझ में आया कि हमारे जितने भी सम्पर्क हैं या जिस भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से हम जुड़े हैं, उसका सदुपयोग हम अपने विद्यालय एवं आसपास के ज़रूरतमन्द छात्रों की बेहतरी के लिए कर सकते हैं। वर्तमान समय में, ये सिर्फ मनोरंजन का ज़रिया मात्र नहीं रह गए हैं बल्कि सामाजिक सहयोग, परिवर्तन एवं मानवता कायम रखने में भी अपनी सहभागिता निभा सकते हैं।

प्रियंका कुमारी: पेशे से शिक्षिका, स्वभाव से सामाजिक कार्यकर्ता और हृदय से लेखक हैं। पिछले 14 वर्षों से प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण कार्य। वर्तमान में, मध्य विद्यालय मलहटोल, सीतामढ़ी, बिहार में सहायक शिक्षिका हैं। कई काव्य रचनाएँ प्रकाशित। महिला साक्षरता, महिलाओं के डिजिटल सशक्तिकरण, गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करने व बच्चों से मित्रता करने में विशेष रुचि।

सभी फोटो: प्रियंका कुमारी।